शंकरानंद
क्रांति भवन,कृष्णा नगर,खगड़िया-851204
मो. 8986933049

मुश्किल में

जो बचा है शेष वह मुश्किल में है
इन दिनों खतरे में
खेत कोई हड़प लेता है
लूट लेता है बाजार लगाकर कोई आग
कोई घर गिरा देता है बुलडोजर से
कोई नींद के पास लोहा पीटता है
कोई उलट देता है गिलास का पानी
जब प्यास से सूखता है कंठ

न कोई नगाड़ा बजा है कहीं
न कोई मुनादी सुनाई पड़ी है

फिर भी युद्ध चल रहा है रोज
मैं लड़ रहा हूं निहत्था।

गिरवी

जब सारे रास्ते बंद हुए
याद आया कि
अब भी कुछ बाकी है
जिसे गिरवी रख कर कुछ दिन जीना संभव है

पहले गहना रखा
फिर बर्तन
फिर घर गिरवी

और जब खेत में फसल कटने का समय आया
दो दिन पहले आंधी आयी
फिर पानी बरसा
इतना बरसा कि
घर के एक एक आदमी की सांस डूब गई

सबकी सांस भी गिरवी थी!

बच्चे की हंसी

पहली बार की हंसी है ये
बिल्कुल नई

इसमें कोंपल का रंग है
या फूलों की कोमलता
नदी के पानी की है धीमी तरंग
ये हंसी पहली ऋतु है
या पहला बादल

इसे सिखाया नहीं जा सकता
इसे बताया नहीं जा सकता

ये हंसी रोने का विकल्प है
खोने के बाद की उम्मीद है ये
ये है क्रूरता का जवाब
मैं इसे देखना चाहता हूं हमेशा।

बुनने के दिन

वे स्त्रियां आंगन में बैठ कर
धागों से दिन बुन रही हैं
बुन रही हैं तारों से भरी रात

उसी धागे से स्वाद बुनती हैं
उसी से प्रेम
उसी धागे से स्वप्न बुनती हैं
उसी से उम्मीद
सब कुछ इसी पर टिका है अब इस पृथ्वी पर

जब लगता है कि बुनने में कोई दुःख नहीं
ठीक तभी पड़ जाती है गांठ

वे स्त्रियां पहले गांठ खोल रही हैं
फिर बुनने का काम हो जाएगा शुरू।